30

नरक का पूर्वस्वाद

(9:12-19)

पिछले पाठ में हमने भयंकर ''टिड्डी-घोड़ा-बिच्छू-द्वि नस्लीय मनुष्य''[1] के पृथ्वी पर छोड़े जाने को देखा था। उनकी प्रताड़ना से मनुष्य जाति में परिवर्तन नहीं आया, परन्तु परमेश्वर का काम पूरा नहीं हुआ था। परमेश्वर ने अपने लोगों को घर वापस लाने के लिए हर ढंग अपनाने का निश्चय किया हुआ था (और है)। इसी कारण 9:12 में घोषणा है ''पहली विपत्ति बीत चुकी, देखो, अब इसके बाद दो विपत्तियां और आने वाली हैं'' (देखें 8:13)। ''पहली विपत्ति'' पांचवीं तुरही द्वारा घोषित सताने वाली टिड्डियों को कहा गया है। अगली विपत्ति इस पाठ का विषय होगी: स्वर्गदूत/सेना जो छठी तुरही बजने पर दिखाई दी। तीसरी और अन्तिम विपत्ति प्रभु के लौटने पर अन्तिम तुरही होगी (11:15-19)।

सात तुरहियों का अध्ययन करते हुए हमने एक प्रगति को देखा, जिसमें पहली चार तुरहियों से यह संकेत मिला कि पाप जीवन को नारकीय बना देता है। पांचवीं तुरही में बताया गया है कि पाप पीड़ा देता और सताता है। छठी तुरही का अध्ययन करते हुए हम देखेंगे कि पाप अक्सर मृत्यु का कारण बनता है। हम इस बात पर ज़ोर देंगे कि पाप केवल पापी को ही आहत नहीं करता, बल्कि यह दूसरों को भी प्रभावित करता है।

वेदी से आने वाली आवाज़ (9:13)

''जब छठवें स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी तो जो सोने की वेदी परमेश्वर के सामने है, उसने सींगों में से[2] [यूहन्ना ने] ऐसा शब्द सुना'' (आयत 13)। 8:3 में हमने सोने की वेदी के बारे में पढ़ा था।[3] उस वेदी पर पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं में धूप मिलाई गई थी। उन प्रार्थनाओं के उत्तर में वेदी में से आग विश्वासियों का बदला लेने के लिए पृथ्वी पर फैंकी गई थी। फिर से सोने की वेदी का परिचय यह स्मरण कराता है कि प्रभु अपने लोगों की विनतियां सुनता और उनका उत्तर देता है।

हमें यह नहीं बताया गया कि ''सींगों में से आने वाला शब्द'' किसका था। 16:7 में वेदी स्वयं बोलेगी और हो सकता है कि यहां भी ऐसा ही हुआ हो। महत्वपूर्ण विवरण यह है कि वेदी ''परमेश्वर के सामने'' थी। सींगों में से आने वाले शब्द ईश्वरीय आज्ञा थे।

फरात से स्वर्गदूत (9:14-16क)[4]

आवाज़ ने स्वर्गदूत को जिसने आवाज़ निकाली थी, कहा, ''उन चार स्वर्गदूतों को जो बड़ी नदी फरात के पास बन्धे हुए हैं, खोल दे'' (आयत 14)।[5] इन आदेशों का पालन किया गया: ''और वे चारों दूत खोल दिए गए, जो उस घड़ी, और दिन, और महीने, और वर्ष के लिए मनुष्यों की एक तिहाई को मार डालने के लिए तैयार किए गए थे''(आयत 15)।

14 और 15 आयतों में कई दिलचस्प विवरण हैं:

(1) इसमें *कहां* का पहलू है: स्वर्गदूत ''बड़ी नदी *फरात* के पास बन्धे हुए'' थे। बाद में ''महानदी फरात'' पर छठा कटोरा उण्डेला जाना था (16:12), सो स्पष्टतया जगह का महत्व था।

जहां तक *यहूदियों*की बात थी, फरात का उनके लिए विशेष अर्थ था: यह अदन में से निकलने वाली चार नदियों में से एक थी (उत्पत्ति 2:10, 14) और मनुष्य का पहला घर और वह स्थान था, जहां मनुष्य ने पहली बार पाप किया था (उत्पत्ति 3)। यह अब्राहम से की कई प्रतिज्ञा वाले और फिर अब्राहम की संतान को दिए गए देश की उत्तरी सीमा थी (उत्पत्ति 15:18; निर्गमन 23:31; 1 राजा 4:21)। इसके अलावा यह खतरे का भी कारण बनी रहती थी, क्योंकि उनके शक्तिशाली शत्रु नदी के उस पार छिपे रहते थे। फरात का उल्लेख इस्राएलियों को उनके पापों का दण्ड देने के लिए परमेश्वर की धमकियों में होता था (देखें यशायाह 8:5-8; यिर्मयाह 46:10)। अश्शूरियों और बेबिलोनियों ने अन्ततः फरात को पार करके उत्तरी और दक्षिणी राज्यों को कब्ज़े में ले लिया था, जो यहूदियों के लिए बहुत बड़ा अपमान था।

रोम के लिए भी फरात का विशेष महत्व था: दूसरी ओर पारथ था, जो रोमी साम्राज्य के सीमावर्ती क्षेत्र पर एक मात्र सैनिक शक्ति थी।[6] पारथियों की सेना से संसार में सबसे अधिक लोग डरते थे। 53 ई.पू. में पारथियों के हाथों क्रेसुस की अपमानजनक हार के बाद, ''पूर्व के राजाओं'' के ''महानदी फरात'' (16:12) के पार आक्रमण आरम्भ करने का विचार ही किसी रोमी सेनापति को कम्कम्पी देने के लिए काफी था।

रेअ समर्स ने लिखा है कि रोमी साम्राज्य को उखाड़ फैंकने में इन तीन कारकों ने काम किया: प्राकृतिक विपदा, आन्तरिक गंदगी और बाहरी आक्रमण। उसने ध्यान दिलाया कि पहली चार तुरहियों में प्राकृतिक विपदा थी और सुझाव दिया कि पांचवीं तुरही वाली टिड्डियां आन्तरिक गंदगी से मेल खाती थीं। इस प्रकार उसने घोषित किया कि छठी तुरही तीसरे कारक अर्थात बाहरी आक्रमण का प्रतीक है[7]। वचन से यह प्रासंगिकता बनाई जा सकती है।

परन्तु हमें यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि इसकी भाषा सांकेतिक है न कि अक्षरशः इस प्रेरित के दिमाग में किसी भौगोलिक स्थिति और विशेष रूप से आक्रमण करने वाली सेना की बात उतनी नहीं थी, जितनी कि यह सामान्य विचार कि *खतरा* अर्थात *पाप के कारण* स्पष्ट खतरा निकट है। फरात के पार वाली सेना ''किसी भी मानवीय सेना से अधिक खतरनाक'' थी। ''यह अलौकिक, वास्तव में नारकीय, सेना [थी]।''[8]

(2) *कब* के विवरण का सुझाव मिलता है: चारों स्वर्गदूत ''उस घड़ी, और दिन,और

महीने, और वर्ष के लिए'' तैयार किए गए थे (आयत 15क)। ''घड़ी और दिन और महीने और वर्ष'' वाक्यांश *विशेष* समय अर्थात ''परमेश्वर के मन में ठहराए हुए समय'' की बात करने का नाटकीय ढंग है।[9] NIV में ''इसी घड़ी और दिन और महीने और वर्ष'' है। SEB में ''इस *ही* वर्ष के इस *ही* महीने के इस *ही* दिन की *ही* घड़ी'' है।[10] इस आयत का संदेश यह है कि नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में है। उसकी समयसारिणी का केवल उसे ही पता है (देखें प्रेरितों 1:7), परन्तु उचित समय पर उसकी योजनाएं पूरी होंगी। उसके लोग इसे लिखकर रख सकते हैं!

(3) *क्यों* का विवरण अस्पष्ट भी है और परेशान करने वाला भी: स्वर्गदूतों को *''मनुष्यों की एक तिहाई के मार डालने'' के लिए* खोल दिया गया था (आयत 15ख)। पहली बार, हमें स्पष्ट उद्देश्य वाली तुरही मिली है, जिसमें मनुष्यों की मृत्यु शामिल है। पहली चार तुरहियां प्राकृतिक संसार के लिए थीं और लोगों ने केवल परोक्ष रूप से कष्ट सहा था। पांचवीं तुरही ने मनुष्यजाति पर निशाना साधा था, परन्तु टिड्डियों को ''लोगों को मार डालने का अधिकार नहीं दिया गया'' था (9:5क)। इसके विपरीत छठी तुरही की स्पष्ट घोषणा मनुष्यजाति के एक तिहाई को नष्ट करने की थी।

एक बार फिर, न्याय आंशिक था: पूरी मनुष्यजाति नहीं, बल्कि ''केवल'' एक तिहाई नष्ट हुई थी।[11] दो तिहाई मनुष्य बचे रहे थे (9:20क)। इस दो तिहाई में से ही वे लोग थे जिनका परमेश्वर को ध्यान था, जिनकी परमेश्वर को आशा थी कि वे मन फिराएंगे।

(4) इस आयत के और उलझाने वाले पदों में से एक *कौन* है: ''उन *चार स्वर्गदूतों* को ... खोल दे। ... *ये चारों स्वर्गदूत* खोल दिए गए'' (आयतें 14क, 15क)। ये चारों स्वर्गदूत वही थे, जिन्होंने विनाश करने वाली हवाओं को पकड़ा हुआ था (7:1),[12] वे ''भले'' थे या ''बुरे'' इसका महत्व नहीं है। वे जो भी थे, उनका नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में था और वे उसी के आदेश के अनुसार कर रहे थे। यह बात कि *चार* स्वर्गदूत थे केवल यही संकेत देती है कि उनका कार्य सम्पूर्ण पृथ्वी के लिए निर्देशित होना था।[13]

''कौन'' का उलझाने वाला भाग तब आता है, जब हम अगली आयत पढ़ते हैं। स्वर्गदूतों को विशेष कार्य करने की तैयारी के लिए पकड़ा हुआ था। अब उन्हें निर्देश देकर छोड़ दिया गया था। हम स्वर्गदूतों को अपने काम को पूरा करने के लिए तैयार होने की उम्मीद करते हैं। इसके बजाय हमें बताया जाता है कि ''उनकी फौज के सवारों की गिनती बीस करोड़ थी'' (आयत 16क)। सवारों की? ये सवार कहां से आए थे? स्वर्गदूतों का क्या हुआ था? चारों स्वर्गदूत दृश्य से हट गए थे, जिनका दोबारा कभी उल्लेख नहीं होना था।

अधिकतर टीकाकारों का मानना है कि चारों स्वर्गदूत उन सवारों की सेना के *इंचार्ज* थे और वे उन्हें फरात के पार ले गए थे। हो सकता है, परन्तु वचन में ऐसा कोई संकेत नहीं है। दर्शनों की स्वप्न जैसी गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए, मैं एक और सम्भावना बताता हूं। स्वर्गदूतों को दिया गया काम ''मनुष्यों की एक तिहाई को मार डालने'' का था (आयत 15), परन्तु इस काम को किसने पूरा किया? सवारों और उनके घोड़ों ने (9:18)। इसलिए मैं यह सुझाव देता हूं:

स्वर्गदूत = फौज
और
फौज = स्वर्गदूत

रॉबर्ट मुल्होलैंड ने लिखा है, ''दर्शन के अनुभव के लिए रूपक के स्वर के उतार-चढ़ावों में एक इतना आम है कि चारों स्वर्गदूत *अचानक* बहुत बड़ी घुड़सवार सेना बन गए।''[14] आधुनिक फिल्में बनाने में ''मौरफिंग'' नामक विशेष प्रभाव का इस्मेताल किया जाता है। ''मौरफिंग'' एक तकनीक है, जिमसें व्यक्ति (या वस्तु) किसी दूसरे व्यक्ति (या वस्तु) में आराम से जाते दिखाई देती है।[15] अध्याय 9 के पिछले भाग के दृश्य की कल्पना करते हुए हमें अपने सामने एक विशाल सेना के खड़े होने तक स्वर्गदूतों के टिमटिमाने, हटने और बदलने के रूप को देखना होगा।

''नरक के घुड़सवार'' (9:16-19)

अब ''नरक के घुड़सवारों'' के आगे बढ़ने का समय था। (नरक से सवारों (और घोड़ों) का चित्र देखें।१।) ''मैसोपोटामिया में से मुंह से आग उगलते, सांप की पूंछों वाले 20 करोड़ घोड़ों को'' दिखाते हुए यूहन्ना ने अपने आप को हरा दिया।[16]

इस प्रेरित ने पहले कहा था कि ''उनकी फौज के सवारों की गिनती बीस करोड़ थी'' (आयत 16क)। यह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में सबसे बड़ी गिनतियों में से एक है। ''इसकी सामान्य बनावट में एक मील चौड़ी और पच्चासी मील लम्बी घुड़सवार सेना की टुकड़ी बन जाएगी!''[17] यूहन्ना के लिए इतनी बड़ी भीड़ की गिनती करना असम्भव होना था: जैसे उसने 1,44,000 को देखकर (7:4), ''उनकी गिनती *सुनी*'' थी (9:16ख)। किसी ने (शायद किसी स्वर्गदूत ने) उसे गिनती बताई।

इस गिनती को अक्षरश: नहीं लिया जाना चाहिए। अगली आयत इस बात पर ज़ोर देती है कि यह *दर्शन* में देखा गया था। ''दो'' शक्ति को दर्शाता अंक था, जबकि ''दस'' को इसी से गुना करने पर यह अत्यधिक सम्पूर्णता का संकेत देता था। इस कारण ''बीस करोड़'' *अजेय सामर्थ* का संकेत था।[18] इतनी अत्यधिक गिनती का इस्तेमाल क्यों किया गया? जिम मैक्गुइगन ने उत्तर दिया है, ''शत्रु में से जीवन को बचाने के लिए। पवित्र लोगों को आनन्दित करने के लिए उनके परमेश्वर के पास इतनी बड़ी सेना है। परमेश्वर के भौंचक्का कर देने वाले स्वामित्व पर ज़ोर देने के लिए।''[19] मैं उसके द्वारा दिए पहले कारण में छोटा सा परिवर्तन करता हूं: ''शत्रु में से *पाप पूर्णता* को निकालने के लिए।'' याद रखें कि तुरहियों का उद्देश्य पृथ्वीवासियों को सावधान करना और मन फिराने के लिए तैयार करना था।

पूर्ण विजय प्राप्त करने वाली सेना के दर्शन में यूहन्ना के समय के मसीही लोगों को यह बताया गया कि परमेश्वर के पास उन्हें सताने वालों को नाश करने के आवश्यकता से अधिक संसाधन थे। यह हर युग में यह घोषणा करता है कि पाप देशों और लोगों दोनों के लिए खतरनाक और दबा देने वाले परिणाम लाता है!

यूहन्ना सवारों और उनके घोड़ों का विवरण देने को तैयार था। इससे पहले कि वह यह विवरण देता, उसने बताया, ''और मुझे इस दर्शन में... दिखाई दिए'' (आयत 17क)।

> प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में केवल यहीं पर यूहन्ना विशेष रूप से यह संकेत देता है कि उसके प्रकाशन के दर्शन में उसके लिए हो रहे हैं। टिप्पणी ''अनावश्यक जोड़'' नहीं है ... बल्कि इस बात का संकेत है कि उसके विवरण बहुत ही सांकेतिक माने जाएं।[20]

''घोड़ों और उन पर बैठे सवारों'' के बारे में यूहन्ना ने अपने दर्शन में क्या देखा? पहले तो उसने देखा कि ''उन सवारों[21] की झिलमें आग और धूम्रकांत और गन्धक की सी[22] थीं'' (आयत 17ख)। यूहन्ना के विवरण का पूरा प्रभाव लेने के लिए आपको ब्रायन वाट के चित्र में रंग भरना होगा। इस दर्शन में लाल, पीले और नीले तीन मुख्य रंगों का इस्तेमाल हुआ है। आग जैसा रंग लाल होगा; सामान्य धूम्रकांत[23] का फूल नीला होता है; और गन्धक सल्फर का पुराना नाम है, जो पीले रंग का होता है। NCV में कहा गया है, ''उनकी झिलमें आग जैसी लाल, गहरी नीली और सल्फर जैसी पीली थीं।''

घोड़े तो सवारों से भी अधिक प्रभावशाली थे, ''उन घोड़ों के सिर सिंहों के सिरों के से थे'' (आयत 17ग)। सिंह का प्रतीक पहले भी कई बार इस्तेमाल हुआ है (4:7; 5:5; 9:8). अध्याय 9 में दण्ड देने या नष्ट करने की सामर्थ के गौण संकेत के साथ मुख्य अर्थ सामर्थ का प्रतीत होता है। शेर के सिरों वाले घोड़े ताकतवर थे और उन्होंने हज़ारों को मार डालने में योगदान देना था।

ये घोड़े आग उगलने वाले थे: ''और उनके मुंह से आग, और धुआं, और गन्धक निकलती थी[24]'' (आयत 17घ)। अपने मन में आग और धुएं को देखने और सल्फर की *गन्ध* लेने के लिए एक पल रुकें। सल्फर की सड़े अण्डे जैसी तीखी गन्ध लेने वाला व्यक्ति इसे कभी नहीं भूल पाएगा।

''आग और धुआं और गन्धक'' प्रभु की ओर से मिलने वाले दण्ड के समानार्थक शब्द हैं। जब परमेश्वर ने मैदान के दुष्ट नगरों को नष्ट किया, तो उसने ''अपनी ओर से सदोम और अमोरा पर आकाश से गन्धक और आग बरसाई'' (उत्पत्ति 19:24)।[25] प्रकाशितवाक्य हमें शैतान के पीछे चलने की जिद्द करने वालों के लिए रखे गए दण्ड के विषय में बताता है:

> [वे] पवित्र स्वर्गदूतों के सामने, और मेमने के सामने आग और गन्धक की पीड़ा में पड़ेंगे। और उनकी पीड़ा का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा ... और ... रात-दिन चैन न मिलेगा (14:10, 11; देखें 19:20; 20:10; 21:8)।

मुझे गलत न समझें, मैं यह नहीं कह रहा कि प्रकाशितवाक्य 9 के सिंह के सिर वाले राक्षस आग और गन्धक की झील को दिखाते हैं, परन्तु यह कहना गलत नहीं है कि वे *नरक के पूर्व स्वाद* को ही दर्शाते हैं। कई बार आनन्द और संगति के समय हम कहते हैं, ''यह तो

स्वर्ग जैसा आनन्द है।'' ऐसे ही यह भयंकर घोड़े मनुष्यजाति को यह नमूना देते हैं कि नरक कैसा भयंकर होगा।

शायद सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ''आग और धुआं और गन्धक उनके *मुंह* से'' निकली। आयत 19 कहती है, ''क्योंकि उन घोड़ों की सामर्थ उन के मुंह ... में थी।'' यीशु के मुंह से निकलने वाली तलवार का अध्ययन करते हुए (1:16; 2:16) हमने निष्कर्ष निकाला था कि यह तलवार उसके मुख से निकली है, इसलिए तलवार न्याय के उसके *वचन* को दर्शाती है। दो गवाहों का अध्ययन करते हुए हम आग को उनके मुंह से अपने शत्रुओं को नष्ट करने के लिए निकलते देखेंगे (11:5); फिर, यह अवश्य उसी *संदेश* की बात होगी जो उन्होंने सुनाया था। बाद में हम अजगर (शैतान) (12:15) और दुष्टात्माओं को मसीह के शत्रुओं के मुंह से निकलते (16:13) पानी के सैलाब को देखेंगे; दोनों ही घटनाएं झूठ, गलत शिक्षा और ईश्वररहित प्रचार के फैलने से सम्बन्धित हैं।

घोड़ों के *मुंह* से ''आग और धुआं और गन्धक'' की आकृति का यह अर्थ लगता है कि कही गई बातें ''नरक के पूर्व स्वाद'' का एक स्रोत हैं, जिसका हमने उल्लेख किया था। आग और धुएं के सिंह के सिरों वाले पशुओं के मुंह से निकलने की बात पढ़कर मुझे याकूब 3:6 याद आता है: ''जीभ भी एक आग है; जीभ हमारे अंगों में अधर्म का एक लोक है, और सारी देह पर कलंक लगाती है, और जीवन गति में आग लगा देती है, और नरक कुण्ड की आग से जलती रहती है।''

उन जन्तुओं के मुंह से निकलने वाली विनाशकारी आग में झूठी शिक्षा भी शामिल थी। एल्ड्रड एकोल्स ने सुझाव दिया था कि ''मनुष्यजाति को'' घोड़ों का ''वास्तविक भय उनके मुंह से निकलने वाली चीज़ अर्थात परमेश्वर से अलग करने वाली झूठी शिक्षा थी।''[26] परन्तु हमें मृत्यु देने वाली धार्मिक गलती की आग में नहीं आना चाहिए। कठोर, विचारहीन बातें जो हम अपने होंठों से निकलने देते हैं, गलत शिक्षा की तरह अधिक से अधिक लोगों के लिए खतरनाक और विनाशकारी होती हैं।

आयत 19 में मिलने वाले इन खतरनाक घोड़ों की एक और बात है: ''क्योंकि उन घोड़ों की सामर्थ उन के मुंह, *और उनकी पूंछों में* थी; इसलिए कि उनकी पूंछें सांपों की सी[27] थीं, और उन पूंछों के सिर भी थे, और इन्हीं से वे पीड़ा पहुंचाते थे।'' ये घोड़े दोनों ओर से घातक यानी आते-जाते घात कर सकते थे![28] उन भयंकर पूंछों के बल खाने, मुड़ने और मारने की कल्पना करते हुए मेरे ध्यान में उनकी बिच्छुओं की पूंछों वाली टिड्डियों का ध्यान आता है। अध्याय 9 वाले घोड़ों को ''बड़ी हो जाने वाली टिड्डियां कहा गया है।''

आयत 18 घोड़ों के शस्त्रागार की प्रभावकारी शक्ति को रेखांकित करती है: ''इन तीनों मरियों; अर्थात आग, और धुएं, और गन्धक से जो उसके मुंह से निकलती थीं, मनुष्यों की एक तिहाई मार डाली गई।'' तीनों अभिव्यक्तियों में से हर एक का ''कुछ न कुछ अर्थ'' निकालने की कोशिश न करें। ''मरियां'' निर्गमन की भाषा का भाग हैं, जिसका इस्तेमाल पूरे प्रकाशितवाक्य में हुआ है,[29] जबकि ''तीन'' केवल इस बात का संकेत है कि वे मरियां *ईश्वरीय* न्याय को दिखाती हैं।[30]

अब जबकि हमने वचन पूरा देख लिया है, हमें पीछे मुड़कर उस दृश्य को देखना चाहिए।[31] बीस करोड़ घोड़ों वाली इस सेना का क्या अर्थ है?

जैसा कि पहले कहा गया था, कुछ लोगों की पसंदीदा व्याख्या यह है कि प्रकाशितवाक्य 9 वाली सेना एक वास्तविक सेना है: अतिवादी लोग पहली शताब्दी के पारथियों पर ध्यान लगाते हैं, सतत ऐतिहासिक ढंग की वकालत करने वाले आठवीं और नौवीं शताब्दी की मुस्लिम टोलियों के बारे में लिखते हैं और कई भविष्यवादी/प्रीमिलेनियलिस्टों के लिए पसंदीदा वर्तमान सेना चीन की टोलियां हैं। घोड़ों को आमतौर युद्ध के हथियार बनाया जाता है: द्वितीय विश्वयुद्ध के समय व्याख्या करने वाले लोग आग उगलने वाले घोड़ों की तुलना टैंकों और तोपों से करते थे। आज सनसनी फैलाने वालों को मिसाइल लॉन्चरों तथा अन्य विनाशक हथियारों की बात करना अच्छा लगता है।

अब तक आप प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के बारे में समझ गए होंगे कि यह पता चलना कि ऊपर दी गई अधिकतर व्याख्याएं पुस्तक की शैली और उद्देश्य दोनों से मेल नहीं खाती हैं।[32] पहली शताब्दी के मसीही लोगों को सेनाओं के गुप्त हवालों से क्या शांति मिल सकती थी, जो भविष्य में सैकड़ों सालों बाद होने वाली बातें थीं, जिसमें टैंक, तोपें और मिसाइल लॉन्चर होने थे?

दूसरी ओर मुझे घोड़ों और उनके सवारों को सामान्य रूप में युद्ध के प्रतीक के रूप में विचार करने पर कोई आपत्ति नहीं है।[33] आप जानते ही होंगे कि परमेश्वर ने अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कालांतर में वास्तविक सेनाओं का इस्तेमाल किया; पुराना नियम ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है। यह भी सच है कि परमेश्वर ने शक्तिशाली रोमी साम्राज्य को गिराने के लिए बाहरी आक्रमण का इस्तेमाल किया। परमेश्वर ने हमारी ही शताब्दी में अपनी योजनाओं को पूरा करने के लिए खतरनाक युद्धों का इस्तेमाल किया । उदाहरण के लिए द्वितीय विश्वयुद्ध से मसीह की कलीसियाओं के मिशनरी प्रयास एक जुट हो गए: कई मसीही सिपाही उन्हीं क्षेत्रों में सुसमाचार सुनाने की ठान कर वापस चले गए, जहां उन्होंने युद्ध किया था। युद्ध के सम्बन्ध में हमें एक बात समझ लेनी आवश्यक है कि संसार जंगली हो जाता है, इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर ऐसा करता है। वह अपनी योजनाओं पर कार्य करता रहता है।

यहां मैं सावधानी की दो बातें कहना चाहूंगा: (1) मुझे घोड़ों और उनके सवारों को सामान्य अर्थ में युद्ध के प्रतीक के रूप में विचार करने पर कोई आपत्ति नहीं है *यदि* इसके संकेत पर बहुत अधिक दबाव न दिया जाए। जी.आर.बिसले-मुर्रे ने टिप्पणी की है कि यदि यूहन्ना ''यह जानकर कि बाद के कुछ पाठकों ने यह मान लिया कि सवारों और घोड़ों की उसकी तस्वीर का अर्थ ज्यों का त्यों ले लिया जाए तो चकित और सम्भवतया परेशान हुआ होता।''[34] वारेन वियर्सबे ने लिखा है:

> यह विवरण युद्ध के घोड़ों, जैसा कि हम उन्हें जानते हैं या इसके लिए आधुनिक हथियार, जैसे टैंकों से मेल नहीं खा सकता। यह दावा करना कि यह सेना ही है, और किसी देश (जैसे चीन) की ओर इशारा करना जो 200 मिलियन सिपाही होने का दावा करता है, उस संदेश की ओर ध्यान न देना है जो यूहन्ना देना चाह रहाहै।[35]

(2) घोड़ों और उनके सवारों को सामान्य युद्ध के प्रतीक के रूप में विचार करने पर मुझे कोई आपत्ति नहीं है, *यदि* यह संकेत शारीरिक युद्ध के साथ न मिलाया जाए। शारीरिक युद्ध विशेष रूप से मनुष्य की मनुष्य के साथ अमानवीयता होती है क्योंकि आमतौर पर युद्ध में निर्दोष लोग कष्ट उठाते हैं और जीवन में ऐसा ही होता है।

जब मैं इस पाठ की तैयारी कर रहा था तो मुझे *क्रिश्चियन क्रोनिकल*[36] जनवरी, 98 का अंक मिल गया। मुख्य कहानी में बताया गया था कि एक अग्निकांड में ओक्लाहोमा क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी की 15 लाख डॉलर की सम्पत्ति जल गई। उसके बिल्कुल नीचे एक जवान की कहानी थी, जो पैडुका, कैंटकी के एक हाई स्कूल में प्रार्थना के लिए इकट्ठे हुए छात्रों पर गोलियां चलाने लगा। उस टोली में तीन लड़के कलीसिया के थे।

ऊपर दी गई दुर्घटनाओं जैसी बातें सुर्खियां बन जाती हैं, परन्तु पाप तो दूसरों के जीवन को हर दिन प्रभावित कर रहा है: एक आदमी किसी दूसरी स्त्री के पीछे अपनी पत्नी को छोड़ जाता है, जिससे उसके परिवार का हर सदस्य आहत होता है। शराबी ड्राइवर एक आदमी और उसकी पत्नी पर गाड़ी चढ़ा देता है और उनके बच्चों को यतीम कर देता है। अपने ढंग से जीने वाला आदमी मण्डली को बिखेर कर लोगों को प्रभु से दूर कर देता है।[37] हमें इस बात को समझना चाहिए कि जैसे आग जला देती है, धुआं छा जाता है और गन्धक जल जाती है, वैसे ही हमारे पाप दूसरों को आहत करते और उन्हें नष्ट करते हैं।

सारांश

अगले पाठ में, हम देखेंगे कि चेतावनियों के बावजूद मनुष्य अपरिवर्तित ही रहा।

> और बाकी मनुष्यों ने जो उन मरियों से न मरे थे, अपने हाथों के कामों से मन न फिराया, कि दुष्टात्माओं की, और सोने और चांदी, और पीतल, और पत्थर, और काठ की मूरतों की पूजा न करें, जो न देख, न सुन, न चल सकती हैं। और जो खून, और टोना और व्यभिचार, और चोरियां, उन्होंने की थीं, उन से मन न फिराया (9:20, 21)।

मुझे उम्मीद है कि बहुतों की तरह आपका हृदय कठोर नहीं है। मुझे उम्मीद है कि आपके मन तक अब भी पहुंचा जा सकता है। यदि आपको अपने पापों से मुड़ने की आवश्यकता है तो अपने लिए और अपने प्रियजनों के लिए आज ही मुड़ जाएं।[38] पाप का दूसरों के जीवन में बुरा असर पड़ सकता है और पड़ता है।

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

यदि आप इस पाठ में से सिखाते या प्रचार करते हैं, तो इस पुस्तक में ''तुरहियां चौकस करने के लिए हैं।'' चार्ट की समीक्षा के लिए समय निकालें।

इस पाठ के वैकल्पिक शीर्षक ''नरक से घुड़सवार'' और ''हैड या टेल, आप हार गए'' हैं।

टिपणियां

[1]अर्ल एफ. पाल्मर, *1, 2, 3 जॉन एण्ड रैवलेशन,* द कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़, अंक 12 (डैलस: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 188. [2]निर्गमन 37:25 धूप की वेदी के ''सीगों'' की बात बताता है। ये सींग वेदी के ऊपरी सिरों में किए गए विस्तार थे। अपोकलिप्टिक साहित्य में सींग आमतौर पर शक्ति का संकेत देता है। *(ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में 5:6 पर नोट्स देखें।) ''सोने की वेदी के चार सींगों'' का भी महत्व इस कारण हो सकता है कि बलिदान किया जाने वाला लहू कई बार उन सींगों पर लगाया जाता है (लैव्यव्यवस्था 4:7)। [3]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में 8:3 पर नोट्स देखें। [4]स्वर्गदूत पहले फरात *में* थे परन्तु फिर उन्हें छोड़ दिया गया था, जो इस बात का संकेत है कि उन्हें कहीं और जाने के लिए छोड़ा गया था। [5]यह पहली बार है कि स्वर्ग धूप को मिली तुरही उस घटना में मिल गई जो उसने सुनाई थी। [6]पारथ पर और विस्तृत जानकारी के लिए, *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पृष्ठ 62 पर अतिरिक्त लेख ''रोम का प्रतिद्वंद्वी: पारथ'' देखें। [7]देखें रेअ समर्स, *वर्धी इज़ द लैम्ब* (नैशविल्ले: ब्राडमैन प्रैस, 1951), 159. [8]जी. आर. बिस्सले-मुर्रे, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू सैंचुरी बाइबल कमैंट्री सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1974), 164. [9]होमेर हेली, *रैवलेशन: एन इंट्रोडक्शन एण्ड कमैंटी* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 235. [10]*द सिंपल इंग्लिश™ इंटरनैशनल एडिशन* (डैलस: इंटरनैशनल बाइबल फाउंडेशन, 1980)।

[11]8:7-12 में, ''पृथ्वी की एक तिहाई जल गई'' (पहली तुरही), ''समुद्र का एक तिहाई लहू हो गया'' (दूसरी तुरही), ''एक तिहाई पानी नागदौना सा कड़वा हो गया'' (तीसरी तुरही), और सूर्य, चांद और तारों की एक तिहाई पर मार पड़ी (चौथी तुरही) थी। [12]दोनों समूहों में उन्हीं स्वर्गदूतों के होने की बात मानने का तो कोई कारण नहीं है परन्तु यह मानने के कई कारण हैं कि वे नहीं थे: अध्याय 7 वाले स्वर्गदूतों ने रोके रखा *था* जबकि अध्याय 9 वाले स्वर्गदूतों को रोका गया *था*। इसके अलावा दोनों समूह अलग-अलग स्थानों में थे। [13]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पृष्ठ 46 पर अंक ''चार'' के सांकेतिक महत्व पर टिप्पणियां देखें। [14]एम. मुल्होलैंड, जूनि., *रैवलेशन: होली लिविंग इन एन अनहोली वर्ल्ड,* फ्रांसिस एसबरी प्रैस, कमैंट्री, सामान्य, संस्क., एम. मुल्होलैंड, जूनि. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: फ्रांसिस एस्बरी प्रैस, 1990), 198. [15]''मौरफ'' ''आकार या रूप बदलना'' के अर्थ वाले एक यूनानी शब्द *metamorphosis* का लघु रूप है। बीते समय में, फिल्मों को स्वरूप देने के लिए स्टॉपफ्रेम प्रक्रिया से बनाया जाता था, जो रुक-रुक कर चलती थीं। ''मौरफिंग'' के आधुनिक चमत्कार से अब इसे कम्प्यूटर से किया जाता है। [16]माइकल विल्कोक, *आई सॉ हैवन ओपन्ड द मैसेज आफ़ रैवलेशन,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1975), 98-99. [17]समर्स, 158-59. [18]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पृष्ठ 45 से 48 पर अंकों के संकेतों पर नोट्स देखें। ऐसा ही अंक भजनसंहिता 68:17 में परमेश्वर की सेना के सम्बन्ध में इस्तेमाल हुआ है (दोनिय्येल 7:10)। [19]जिम मैक्गुइगन *द बुक आफ़ रैवलेशन, लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़* (लब्बॉक: इंटरनैशनल बिब्लिकल रिसोर्सिस, 1976), 143. [20]रॉबर्ट माउंस, *द बुक आफ़ रैवलेशन,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 202.

[21]''उन सवारों'' वाक्यांश अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया है। मूल लेख में स्पष्ट नहीं है कि सवारों या घोड़ों या दोनों की झिलमें थीं। पारथी सेना में घोड़ों और उनके सवारों को भी झिलम पहनाई जाती थी। [22] कुछ लोगों को झिलमों को ''अग्निमय'' और धुआं छोड़ने वाली के रूप में सोचना अच्छा लगता है। [23]''धूम्रकांत'' यूनानी शब्द का अक्षरश: शब्द है। इसका अर्थ नीले रंग का मोती हो सकता है। (21:20 में नीलम के लिए इसी शब्द का इस्तेमाल हुआ है।) अध्याय 9 और अध्याय 21 में दोनों जगह "jacinth" है। यह शब्द केवल गाढ़े नीले रंग के लिए ही इस्तेमाल हो सकता है। 9:17 के अन्तिम भाग में "hyacinth" की जगह ''धुआं'' इस्तेमाल हुआ है, सो हमें इस रंग को सम्भवतया धुएं जैसे नीले रंग के रूप में देखना चाहिए। [24]गन्धक पर और जानकारी के लिए, *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की आगामी पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 4'' में 14:10 पर टिप्पणियां देखें। [25]पुराने नियम में इन शब्दों के इस्तेमाल के आदर्श उदाहरणों के लिए देखें भजन संहिता 11:6; यशायाह

34:9; यहेजकेल 38:22. [26]एल्ड्रेड एकोल्स, *हैवन्ट यू हर्ड? देअर'स ए वार गोइंग ऑन!: अनलॉकिंग द कोड टू रैवलेशन* (फोर्ट वर्थ, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग, 1995), 180. एकोल्स के मन में एक विशेष गुट की झूठी शिक्षा थी। [27]सांप की पूंछ का संकेत ''सांप जो इबलीस और शैतान कहलाता है'' से सम्बन्ध होना हो सकता है (12:9)। [28]कई टीकाकार लिखते हैं कि पारथी घुड़सवार सेना के लोगों ने शत्रु की ओर बढ़ते हुए तीरों की बौछार कर दी और अपने घोड़ों के भागने पर उनकी पूंछों पर एक और बौछार कर दी। इससे आयत 19 का रूपक प्रभावित हुआ हो सकता है और नहीं भी। [29]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पृष्ठ 79 पर ''कब तक, हे प्रभु?'' पाठ के अलावा इस पुस्तक में ''जगाने के लिए परमेश्वर की पुकार'' और ''पाप का स्व-विनाशकारी स्वभाव'' पाठ देखें। [30]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पृष्ठ 46 पर अंक ''तीन'' के संकेत पर नोट्स देखें।

[31]यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल क्लास के रूप में कर रहे हैं, तो यहां पर अपने छात्रों से सेना के दर्शनों से उन पर पड़ने वाले प्रभावों को जानना बेहतर होगा। [32]एक सम्भावित अपवाद पारथियों की आक्रामक सेना के सम्बन्ध में व्याख्या है, जिसने रोमी सेनाओं को एक से अधिक बार हराया था। [33]आपको चाहिए कि इस सेना की तुलना सातवीं मुहर टूटने पर छोड़े गए लाल घोड़े से करें (6:3, 4)। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में ''गरजती टापें'' और ''कोई आश्चर्य नहीं!'' पाठ देखें। [34]बिसले-मुर्रे, 166-167. [35]वारेन डब्ल्यू वियर्सबे, *द बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री* , अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 595. [36]*क्रिश्चियन क्रोनिकल* मसीही की कलीसियाओं से जुड़े समाचार देने वाला एक अन्तरराष्ट्रीय समाचार पत्र है। [37]इस सामग्री का इस्तेमाल क्लास में करते हुए मैंने छात्रों से और उदाहरण पूछे कि नकारात्मक रूप से किसी के पाप का असर दूसरों पर कैसे हो सकता है। कई अच्छे-अच्छे उदाहरण मुझे मिले। [38]यदि इस पाठ का इस्तेमाल सरमन के रूप में किया जाता है तो सुनने वालों को बताएं कि प्रभु की बात मानने के लिए क्या आवश्यक है। इस पुस्तक में ''जगाने के लिए परमेश्वर की पुकार'' और ''पाप का स्व-विनाशकारी स्वभाव'' पाठों में निष्कर्ष देखें।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. बाइबल में वर्णित फरात नदी के समय की समीक्षा बताएं। यहूदियों के लिए इस नदी का क्या महत्व था? रोमियों के लिए क्या महत्व था?
2. ''और दिन और महीने और वर्ष'' वाक्यांश का क्या महत्व है (9:15)?
3. सांकेतिक अंक ''बीस करोड़'' का क्या अर्थ है?
4. घोड़ों और उसके सवारों का वर्णन करें और अलग-अलग विवरणों के सम्भावित अर्थों पर चर्चा करें। इससे भी बढ़ कर, विवरण को पढ़ कर आप पर इसका पूर्ण प्रभाव क्या पड़ता है?
5. इस तथ्य का कि आग और धुआं घोड़ों के मुंह से आया, क्या सम्भावित महत्व है?
6. पाठ में दूसरों के जीवन में पाप के प्रभाव के कई उदाहरण हैं। क्या आप अतिरिक्त उदाहरणों पर विचार कर सकते हैं?

नरक से सवार (और घोड़े) (9:16-19)